नीतीश को माफ़िया की चुनौती : लोकतंत्र या अपराधतंत्र

मनोज कुमार झा

हाल ही में एक पत्रकार की हत्या का आरोप भी उस पर लग चुका है। शहाबुद्दीन को आतंक का पर्याय भी कहा जाता रहा है। सभी उसके बारे में जानते हैं। कम से कम बिहार में तो उससे बड़ा गैंगस्टर दूसरा कोई नहीं है। ऐसा गैंगस्टर शुरू से ही सामाजिक न्याय के मसीहा लालू के संरक्षण में रहा और लालू उसके माध्यम से कैसे अपराध का साम्राज्य संचालित करते रहे, इसे लोग जानते हैं। लालू राज को जंगल राज और महाजंगल राज कहा गया तो ऐसे ही गैंगस्टरों की वजह से, जिन्होंने सामाजिक न्याय की धज्जियां उड़ा कर रख दी। बहरहाल, शहाबुद्दीन जेल तभी भेजा जा सका जब नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने। उस पर हत्यायों के ही इतने आरोप हैं कि मुकदमें सैकड़ों वर्षों में खत्म नहीं हो सकते और सजा मिले तो न जाने कितनी मिले। बहरहाल, वह जेल में आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा था।

बिहार में नीतीश कुमार के सामने एक बार फिर नई चुनौती सामने आ गई है। ये चुनौती है माफिया-गैंगस्टर पर काबू पाने की। माफिया शहाबुद्दीन ने जमानत पर जेल से बाहर आते ही जो तेवर दिखाए हैं, वह बिहार की राजनीति में एक नये सत्ता-संघर्ष का संकेत करने वाला है। सभी जानते हैं कि शहाबुद्दीन जैसे माफिया और हत्यारे को पालने-पोसने का काम गरीबों के तथाकथित रहनुमा लालू यादव ने किया जो आज बिहार की राजनीति में बिग ब्रदर की भूमिका में हैं। नीतीश सत्ता में बने रहें, इसलिए यह उनकी मजबूरी है कि अपने बड़े भाई साहब लालू की बातें मानते रहें, भले ही वे कितनी भी उन्हें बुरी क्यों न लगे। लालू के सामने समर्पण करना नीतीश की मजबूरी है। लालू जंगल राज के प्रतिनिधि है, नीतीश सुसाशन बाबू कहे जाते रहे। दोनों के चरित्र और स्वभाव के साथ राजनीतिक शैली में भी अंतर रहा है। पर 2014 के मोदी लहर में नीतीश के जदयू को करारी हार का सामना करना पड़ा था, यद्यपि इससे बिहार में उनकी कुर्सी को ख़तरा नहीं था। पर नीतीश ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया और एक महादलित जीतन राम मांझी को मुख्यमंत्री बना दिया यह सोच कर कि वे उनका आदेश पालन करेंगे और वे नैतिकता के आधार पर इस्तीफा देने वाले मुख्यमंत्री के रूप में अपनी छवि चमकाएंगे। जीतन राम मांझी ने नीतीश के साथ जो किया, वह सभी जानते हैं। बहरहाल, बिहार विधानसभा चुनाव में जीत के लिए नीतीश और लालू की भी यह मजबूरी हो गई कि वे गठजोड़ कायम करें। तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादियों को भी लगा कि यह गठजोड़ समय की मांग है, बहुत ज़रूरी है। बीजेपी को सत्ता से दूर रखने के लिए इनका साथ आना जरूरी है। बहरहाल, ये बीजेपी को बिहार की सत्ता से बाहर रखने में सफल रहे। पर अधिकतम सीटें जीत कर लालू यादव वाकई बिग ब्रदर की भूमिका में आ गए। यह नीतीश की मजबूरी है कि वे लालू के कहे अनुसार चलें। नीतीश ने अनचाहे ही सही, लालू के दो अनुभवहीन बेटों को मंत्रीपद दिया। एक तो उपमुख्यमंत्री बन गया। यह बहुत ही हास्यास्पद था। पर क्या करें। कोई दूसरा चारा नहीं था। पर अब नीतीश को एक माफिया सरगना ने जो खुला चैलेंज दे दिया है, उस पर चुप्पी साध जाना और सारा जहर पी लेना लगता है, नीतीश के लिए संभव नहीं होगा। यही कारण है कि उन्होंने शहाबुद्दीन को दोबारा जेल भिजवाने की कवायद शुरू कर दी है और जदयू के उस विधायक को नोटिस दिया गया है जो जेल से रिहा होने जा रहे माफिया सरगना की अगवानी करने गया था। शहाबुद्दीन की अगवानी करने राजद के बहुतेरे विधायक गए थे। पर इस पर लालू को कोई आपत्ति नहीं है। लालू ने कोई बयान नहीं दिया। पर जमानत पर जेल से छूटते ही शहाबुद्दीन ने कहा कि उसके नेता लालू थे, लालू हैं और लालू रहेंगे। नीतीश कुमार तो परिस्थितिवश मुख्यमंत्री बन गए। कहना नहीं होगा कि शहाबुद्दीन का यह वक्तव्य अनायास नहीं होगा। वहां हजारों की संख्या में उसके और लालू यादव के राजद समर्थक लोग मौजूद थे। देश के तमाम चैनल और मीडिया प्रतिनिधि भी वहां मौजूद थे। जेल से बाहर आते ही माफिया और गैंगस्टर का जोरदार स्वागत हुआ। किसी हीरो की तरह, किसी नेता की तरह जिस पर न जाने कितनी हत्यायों के आरोप हैं। कितने बड़े अफसरों को वह सरेआम जूते मारता रहा है। जेएनयू के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष और सीपाई माले नेता चंद्रशेखर की हत्या का उस पर आरोप है।

हाल ही में एक पत्रकार की हत्या का आरोप भी उस पर लग चुका है। शहाबुद्दीन को आतंक का पर्याय भी कहा जाता रहा है। सभी उसके बारे में जानते हैं। कम से कम बिहार में तो उससे बड़ा गैंगस्टर दूसरा कोई नहीं है। ऐसा गैंगस्टर शुरू से ही सामाजिक न्याय के मसीहा लालू के संरक्षण में रहा और लालू उसके माध्यम से कैसे अपराध का साम्राज्य संचालित करते रहे, इसे लोग जानते हैं। लालू राज को जंगल राज और महाजंगल राज कहा गया तो ऐसे ही गैंगस्टरों की वजह से, जिन्होंने सामाजिक न्याय की धज्जियां उड़ा कर रख दी। बहरहाल, शहाबुद्दीन जेल तभी भेजा जा सका जब नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने। उस पर हत्यायों के ही इतने आरोप हैं कि मुकदमें सैकड़ों वर्षों में खत्म नहीं हो सकते और सजा मिले तो न जाने कितनी मिले। बहरहाल, वह जेल में आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा था। पर दरिंदा कहा जाने वाला शहाबुद्दीन जेल में ही अपना दरबार लगाता था। शहाबुद्दीन को वर्ष 2014 में सीवान में दो सगे भाइयों पर तेजाब डालकर उनकी जान लेने के मामले में एक गवाह की हत्या का आरोपी बनाया गया था। इस मामले में उसे पटना हाईकोर्ट से जमानत मिली। राजद का पूर्व सांसद शहाबुद्दीन 12 साल बाद जेल से रिहा हुआ। पहले वह सीवान जेल में बंद था, पर बाद में उसे भागलपुर जेल भेज दिया गया, क्योंकि सीवान जेल में वह प्रशासन पर भारी पड़ रहा था। वह जेल से ही अपराध के अपने साम्राज्य का संचालन करता था।

बहरहाल, 10 सितंबर को जेल से बाहर आते ही उसके लालू यादव को अपना नेता और नीतीश कुमार को परिस्थितिजन्य मुख्यमंत्री बताने को लालू की एक बड़ी चाल के रूप में भी देखा जा रहा है। कुछ लोगों का ये मानना है कि पुत्रमोह में धृतराष्ट्र बन चुके लालू चाहते हैं कि उनके बेटे को मुख्यमंत्री की गद्दी मिले। पर नीतीश के रहते यह संभव नहीं है। कहा ये भी जा रहा है कि शहाबुद्दीन ने जो कहा है, लालू के इशारे पर ही कहा है। यदि यह सच है तो वस्तुत: बिहार की दुर्दशा तय है। नीतीश कुमार बहुत सफल मुख्यमंत्री साबित नहीं हो रहे। शराबबंदी शोशेबाजी के सिवा और कुछ नहीं। बेरोजगारी दूर करने के मोर्चे पर वे कुछ नहीं कर पाए। अन्य उपलब्धियां भी शून्य ही हैं। दूसरी बात ये कि उनके पास जो माफिया बल है, वह लालू के माफिया बल से कमजोर है। ऐसे में, यदि बिहार में उनकी सत्ता पर खतरा मंडराता है तो भाजपा-संघ को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। अपराध बढ़ेंगे, अराजकता फैलेगी और नुकसान जनता को उठाना पड़ेगा। ऐसे में, अब नीतीश कुमार के लिए जरूरी हो गया है कि वे सख्त कदम उठाएं। उन्होंने इसके संकेत भी दिए हैं। पहले भी उन्होंने ही शहाबुद्दीन को सलाखों के पीछे भेजा था। कहा जा रहा है कि नीतीश शहाबुद्दीन को फिर से जेल भेजने और उस पर क्राइम कंट्रोल एक्ट (सीसीए) लगाने की संभावनाओं और उसके कानूनी पहलुओं पर विचार कर रहे हैं। जो भी हो, इस पूरे प्रकरण से लोकतंत्र के पूरी तरह अपराध तंत्र में बदल जाने की सच्चाई ही सामने आई है। यह अपराध तंत्र सिर्फ बिहार ही नहीं, पूरे देश में लोकतंत्र के नाम पर कायम है।

सभी पार्टियों में हैं भेड़िये

- श्वेता राय

क्या दामिनी की वेदना का कोई मोल नहीं? आज भी न जाने कितनी ही दामिनियों का दमन हो रहा है। यह चक्रवात थमने का नाम ही नहीं ले रहा। आज भी 16 दिसम्बर 2012 की वह घटना सबके दिलों को झकझोर देती है। लेकिन बलात्कार और यौन शोषण की घटनाएं कम होने के बजाय बढ़ती ही चली जा रही हैं। सबसे विडंबनापूर्ण बात तो यह है कि जिन पर कानून-व्यवस्था को बनाए रखने की जिम्मेदारी है, वे ही लोग बलात्कार और यौन शोषण में लिप्त पाए जा रहे हैं। अभी हाल में ही राजनीतिक जीवन में शुचिता और नैतिकता का दावा करने वाली पार्टी आप के मंत्री संदीप कुमार का सेक्स स्कैंडल सामने आया।

किसी को जल्दी विश्वास नहीं हो रहा था कि दिल्ली के महिला एवं बाल विकास मंत्री जिन पर महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा एवं विकस की ज़िम्मेदारी है, वह अपने कर्तव्य का निर्वाह इस प्रकार कर रहे हैं। जब उनकी अश्लीलता सीडी सामने आई तो लोगों का विश्वास राजनीतिक नेताओं से उठने लगा। यह ठीक है कि अरविंद केजरीवाल ने उन्हें बर्खास्त कर दिया, पर इस घटना ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। दूसरी तरफ, संदीप कुमार ने यह दलील दी कि उसे दलित होने के कारण इस सेक्स स्कैंडल में फंसाया गया है। यह बात किसी के गले उतरने वाली नहीं थी। सबसे गलत तो यह रहा कि आप के नेता पूर्व पत्रकार आशुतोष ने संदीप कुमार का यह कह कर बचाव करने की कोशिश की कि यह दो व्यस्क लोगों के बीच सहमति से बनाया गया संबंध था और इस पर सवाल नहीं खड़े किए जाने चाहिए। आशुतोष ने इस क्रम में यह भी कह दिया कि नेहरू, गाँधी, बाजपेयी जैसे नेताओं के ऐसे संबंध रहे हैं। यह सरासर गलत है। संदीप कुमार के भ्रष्ट और आपराधिक आचरण के बचाव में आशुतोष जैसे पत्रकार का यह कहना उसके मानसिक दिवालियेपन को ही दिखाता है। लेकिन सिर्फ आशुतोष ही नहीं, कुछ और लोग जो ऊंचे पदों पर रह चुके हैं, इसी तरह का तर्क दे रहे थे। इससे समझा जा सकता है कि स्त्रियों को लेकर मान्य और प्रतिष्ठित कहे जाने वाले लोग कैसा विचार रखते हैं। फिर अपराधियों की बात ही क्या है। बाद में संदीप कुमार के साथ सीडी में नजर आने वाली महिला सामने आई और सुल्तानपुरी थाने में उसने कहा कि राशन कार्ड बनवा देने के बहाने संदीप कुमार ने उसे बुलाया था और फिर दुष्कर्म किया था। बहरहाल, महिला के साथ यौन संबंध उसकी सहमति से बनाए गए या दबाव डाल कर या प्रलोभन देकर, यह ज्यादा मायने नहीं रखता, महत्वपूर्ण है मंत्री का अनैतिक आचरण जिसका बचाव उसकी पत्नी ने भी किया। उसके परिवार वाले ने भी किया और सबसे बढ़ कर संदीप कुमार ने अपने बचाव में दलित होने का तर्क दिया। कहा तो यहां तक जाता है कि वह सीडी अरविंद केजरीवाल के पास मीडिया में आने के पंद्रह दिन पहले ही पहुंच चुकी थी, पर उन तक सीडी पहुंचाने वाले ने कहा कि वे उसे दबाकर बैठे रहे। आखिरकार उसने मीडिया में सीडी दी। तब सारा मामला खुला। इसी बीच, पंजाब के संगरूर में आप नेता विजय चौहान का नाम भी यौन शोषण के मामले में आया। विजय चौहान पंजाब का नहीं है। वह दिल्ली में आप का सक्रिय नेता था और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भी राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय था। पंजाबी अच्छी-खासी बोल लेने के कारण अरविंद केजरीवाल ने उसे इलेक्शन के प्रचार और संगठन आदि के काम के लिए पंजाब भेजा। वहां उसने ऑफिस मेड का यौन शोषण करना शुरू कर दिया। यह शोषण उसने लगातार जारी रखा। आखिरकार, तंग आकर उस मेड ने उसे रहम की भीख मांगी और उसे छोड़ देने को कहा, पर विजय चौहान उसे बहलाता-फुसलाता रहा। इसकी भी ऑडियो सीडी बन गई।

सीडी मीडिया में आ गई। सारी बात पंजाबी में दर्ज है, जिसमें मेड कह रही है कि क्यों वह उसकी इज्जत के साथ खेल रहा है, उसके पति और रिश्तेदारों को पता चल जाएगा तो क्या होगा और विजय चौहान उसे बहला-फुसला रहा है। इस मामले में विजय चौहान पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। वह आरोपों से इनकार कर रहा है। पर सीडी में उसकी ही आवाज है पंजाबी में जो मीडिया क पस मौजूद है। विजय चौहान का नाम अन्ना आन्दोलन में सक्रिय था। अरविंद केजरीवाल भी अन्ना आन्दोलन की ही पैदावार हैं। आम आदमी पार्टी के दो वॉलन्टियर्स ने ही विजय चौहान की दरिंदगी का भंडा सीडी बना कर फोड़ा था, अन्यथा किसी को इसकी खबर नहीं मिल पाती।

आप के एक और एमएलए पर यौन शोषण और छेड़छाड़ का आरोप लगा है। इसके साथ ही दिल्ली के आप विधायक देवेन्द्र सहरावत ने यह आरोप लगया है कि पंजाब में विधायकी का टिकट देने के लिए महिलाओं का शोषण किया जा रहा है। सहारावत ने कहा है कि उन्होंने इस बारे में अरविंद केजरीवाल को बताया है, पर वे कुछ सुनने को तैयार नहीं। तब जाकर उन्होंने मीडिया में यह बात रखी। बहरहाल, ऐसी घटनाएं महज किसी विशेष पार्टी से ही ताल्लुक नहीं रखतीं। भारतीय जनता पार्टी से जुड़े टीनू जैन का नाम भी सेक्स रैकेट में सामने आ चुका है। उसकी तस्वीरें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अटल बिहारी वाजपेयी, राजनाथ सिंह और भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं के साथ हैं। वह नरेंद्र मोदी सेना का स्वयंभू अध्यक्ष भी है। भाजपा के बड़े नेताओं के साथ संबंधों के रसूख के बल पर वह ग्वालियर से हाई प्रोफाइल सेक्स रैकेट चला रहा था। सिर्फ यही नहीं, यौन शोषण करने वाले नेताओं और उनके गुर्गों की किसी दल में कमी नहीं है। आश्चर्य की बात ये है कि सार्वजनिक मंचों पर ये ही बढ़-चढ़ कर स्त्रियों के सम्मान रक्षा की बात करते हैं और बेटी बचाओ अभियान चलाते हैं।

ऐसे ही नेता महिलाओं पर तंज कसते हुए उनकी वेशभूषा पर टिप्पणी करते हैं। उन्हें तन को पूरी तरह से ढंक कर रहने की सलाह देते हैं। पर सच्चाई तो यह है कि वे खुद स्त्रियों के यौन शोषण में लिप्त रहते हैं। वैसे लोगों को संरक्षण देते हैं जो बलात्कारी हैं। सिर्फ आप ही नहीं, न ही भाजपा, तमाम दलों में ऐसे लोगों का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। भूलना नहीं होगा कि हाल ही में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में एक वामपंथी छात्र संगठन आइसा का बड़ा नेता अनमोल रतन एक छात्रा के साथ बलात्कार और ब्लैकमेल के मामले में लिप्त पाया गया। वह महीनों से एक शोध छात्रा का भयादोहन कर यौन शोषण कर रहा था। अंत में तंग आकर छात्रा ने पुलिस में उसके खिलाफ मामला दर्ज कराया। कई दिनों तक जेएनयू कैम्पस में छुपे रहने के बाद जब उसे लगा कि बच पाना संभव नहीं होगा तो उसने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण किया और अभी तिहाड़ में बंद है। अनमोल रतन हाई प्रोफाइल छात्र नेता था।

वह टीवी पर होने वाली बहसों में बुलाया जाता था और टीवी पर स्त्री स्वतंत्रता वगैरह विषयों पर जम कर बोलता था। दामिनी रेप कांड के खिलाफ होने वाले प्रदर्शनों में भी उसने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था। जब ऐसा व्यक्ति बलात्कारी निकले तो जनता किस पर विश्वास करे? दरअसल, यह विश्वास के टूटते और खत्म होते जाने का समय है। राजनीति में भेड़िया युग है। बलात्कारी सभी पार्टियों में भरे हैं, चाहे आप हो, भाजपा हो या लेफ्ट। हर जगह अपराधी मानसिकता के लोग भरे पड़े हैं और उन्हें सुरक्षा भी मिली हुई है। ऐसे में जनता को, खासकर औरतों को सोचना होगा कि वे क्या करें, कौन-सा कदम उठाएं?